संस्कृत दिग्दर्शिका

भोजस्यौदार्यम

सरल हिंदी अनुवाद: हर लाइन हर शब्द का अलग अनुवाद

कक्षा – 12 हिंदी

(हिंदी वाली संस्कृत)

UP BOARD EXAM

- तत : कदाचिद् द्वारपाल आगत्य महाराज भोजं प्राह –

  इसके बाद कभी द्वारपाल ने आकर महाराज भोज से कहा –

- ' देव , कौपीनावशेषो विद्वान् द्वारि वर्तते ' इति ।

  राजा ' प्रवेश कराओ ' ऐसा बोले ।

- राजा ' प्रवेशय ' इति प्राह ।

  राजा ने प्रवेश कराओ ऐसा कहा ।

- ततः प्रविष्टः सः कविः भोजमालोक्य –

  तब प्रवेश करके उस कवि ने भोज को देखकर

- अद्य मे दारिद्र्यनाशो भविष्यतीति

  ' आज मेरी दरिद्रता का नाश हो जाएगा ऐसा ',

- मत्वा तुष्टो हर्षाश्रूणि मुमोच ।

  मानकर प्रसन्न होकर हर्ष के आंसू गिराए ।

- राजा तमालोक्य प्राह –

  राजा ने उसको देखकर कहा -

- ' कवे , किं रोदिषि ' इति ।

  हे कवि ! क्यों रोते हो ।

- ततः कविराह- राजन् ! आकर्णय मद्गृहस्थितिम्

  तब कवि वोला – राजन् मेरे की दशा सुनिए :

- अये लाजानुच्चैः पथि वचनमाकर्ण्य गृहिणी

  अरे ‘ खीलें लो'– ऐसा ऊंचे स्वर से (रास्ते में वेचने वाले की आवाज) सुनकर मेरी पत्नी

- शिशौः कर्णौ यत्नात् सुपिहितवती दीनवदना ।।

  बच्चे के कानों को यत्नपूर्वक बन्द कर दिया दीनमुख वाली ने

- मयि क्षीणोपाये यदकृतं दृशावश्रुबहुले

  और मुझ उपायहीन पर जो आंसुओं से भरी दृष्टि डा

- तदन्तःशल्यं मे त्वमसि पुनरुद्धर्तुमुचितः ।।

  वह मेरे हृदय में बाण के समान चुभी है, जिसे आप ही निकालने में समर्थ हैं ।

- राजा शिव , शिव इति उदीरयन्

  राजा ने शिव , शिव कहते हुए

- प्रत्यक्षरं लक्षं दत्त्वा प्राह

  प्रत्येक अक्षर पर एक लाख देकर कहा –

- ' त्वरितं गच्छ गेहम् , त्वद्गृहिणी खिन्ना वर्तते ' ।

  शीघ्र ही घर जाओ तुम्हारी पत्नी दुःखी है ।

- अन्यदा भोज : श्रीमहेश्वरं नमितुं शिवालयमभ्

  दूसरे दिन भोज भगवान शिव को नमस्कार करने के लिए शिव मन्दिर गए

- तदा कोपि ब्राह्मण : राजानं शिवसन्निधौ प्राह - देव !

  तब कोई ब्राह्मण राजा से शिव के सामने बोला, हे देव !

- अर्द्ध दानववैरिणा गिरिजयाप्यर्द्ध शिवस्याहृतम्

  शिवजी का आधा अंग विष्णु ने और आधा पार्वती ने ले लिया है ।

- देवेत्थं जगतीतले पुरहराभावे समुन्मीलति ।।

  इस पृथ्वी तल पर भगवान् शिव के देह रहित हो जाने पर ।

- गङ्गा सागरमम्बरं शशिकला

  गंगा समुद्र में मिल गई, चन्द्रकला आकाश को

- नागाधिपः क्ष्मातलम्

  शेषनाग पृथ्वीतल से नीचे पाताल में ,

- सर्वज्ञत्वमधीश्वरत्वमगमत् त्वां मां तु भिक्षाटनम् ।।

  सर्वज्ञता और ईश्वरता आपको प्राप्त हुई और भिक्षाटन (भीख मांगना) मुझमें आ गया है ।

- राजा तुष्ट : तस्मै प्रत्यक्षरं लक्षं ददौ ।

  राजा ने सन्तुष्ट होकर उसके लिए प्रत्येक अक्षर पर एक लाख दिया ।

- अन्यदा राजा समुपस्थितां सीतां प्राह-

  दूसरे दिन राजा ने उपस्थित हुई सीता (नामक कवयित्री) से कहा –

- देवि ! प्रभातं वर्णय ' इति । सीता प्राह –

  देवी ! प्रभात काल का वर्णन करो । सीता ने कहा :

- विरलविरलाः स्थूलास्तारा : कलाविव सज्जनाः

  कलियुग में सज्जनों के समान ही कोई - कोई वड़े तारे दिखाई दे रहे हैं ।

- मन इव मुनेः सर्वत्रैव प्रसन्नमभून्नभः ।।

  मुनि के मन के समान आकाश सर्वत्र स्वच्छ हो गया है

- अपसरति ध्वान्तं चित्तात्सतामिव दुर्जनः

  और सज्जनों के चित्त से दुष्ट के समान अन्धकार दूर हो रहा है

- व्रजति च निशा क्षिप्रं लक्ष्मीरनुद्यमिनामिव ।।

  और प्रयत्नहीन व्यक्तियों की लक्ष्मी के समान रात्रि भी शीघ्रता से भागी जा रही है

- राजा तस्य लक्षं दत्त्वा कालिदासं प्राह—

  अनुवाद - राजा ने उसे एक लाख देकर कालिदास से कहा —

- ' सखे , त्वमपि प्रभातं वर्णय ' इति ।

  मित्र ! तुम भी प्रभात का वर्णन करो ।

- ततः कालिदासः प्राह –

  तब कालिदास ने कहा

- अभूत् प्राची पिङ्गा रसपतिरिव प्राप्य कनकं

  पूर्व दिशा सोने से मिलने पर पारे के समान पीली हो गई है ।

- गतच्छायश्चन्द्रो बुधजन इव ग्राम्य सदसि ।

  चन्द्रमा ग्रामीणों की सभा में विद्वान् के समान छविहीन हो गया है ,

- क्षणं क्षीणास्तारा नृपतय इवानुद्यमपराः

  उद्यमहीन राजाओं के समान तारे क्षण भर में क्षीण हो गए हैं

- न दीपा राजन्ते द्रविणरहितानामिव गुणाः ।।

  और धनहीनों के गुणों के समान दीपक शोभित नहीं हो रहे हैं ।

- राजातितुष्टः तस्मै प्रत्यक्षरं लक्षं ददौ ।

  राजा ने अत्यधिक सन्तुष्ट होकर उसे भी प्रत्येक अक्षर के एक लाख दिए ।

JOIN TELEGRAM FOR PDF

VISIT WEBSITE FOR ALL PDF –

WWW.GYANSINDHUCLASSES.COM

THANKS FOR REACHING US

THANKS FOR WATCHING

PLEASE VISIT MY WEBSITE

PLEASE SHARE AND SUBSCRIBE